इकाई 19 अकाली आंदोलन

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

इस इकाई में सिख समुदाय में हुए सामाजिक सुधारों और विशेषतः अकाली आदोलन के बारे में बताया जाएगा। इस आंदोलन से सिख समुदाय में सामाजिक और बौद्धिक परिवर्तन आया और राष्ट्रीय भावना की स्थापना हुई। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- अकाली आंदोलन से पूर्व हुए विभिन्न सुधार आंदोलनों के बारे में जानकारी हासिल कर सकेंगे,
- अकाली आंदोलन के कारणों को स्पष्ट कर सकेंगे,
- अकाली आंदोलन के मुख्य तथ्यों के बारें में बता सकेंगे, और
- अकाली आंदोलन में गुरुद्वारा बिल के महत्व को बता सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

आपने इकाई 8 में पढ़ा है कि 18वीं और 19वीं शताब्दी का समय भारत में सामाजिक और धार्मिक जागृति तथा सुधारों का समय था। सामाजिक जीवन में इन सुधारों ने अंधविश्वास और जाति व्यवस्था पर आक्रमण किया। इन आंदोलनों ने सती प्रथा, स्त्री-शिशु हत्या और बाल विवाह उन्मूलन के कार्य किए। इन्होंने विधवा विवाह, स्त्रियों के लिए समान वेतन और आधुनिक शिक्षा का आह्वान किया। इन सुधार आंदोलनों ने मुख्य रूप से हिन्दू समुदाय में व्याप्त कुरीतियों पर ही ध्यान दिया। इसी समय, दूसरे समुदायों में जैसे मुसलमान और सिक्खों में भी सामाजिक और धार्मिक सुधार चल रहे थे। सिख जाति को भी, जो सिख गुरुओं के मार्ग से भटक गई थी, सामाजिक और धार्मिक सुधार की आवश्यकता थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों की चर्चा हो चुकी है इस इकाई में हम सिख समदाय में हो रहे सामाजिक और धार्मिक सुधारों की चर्चा करेंगें–विशेष तौर से इसमें अकाली आंदोलन का योगदान। अकाली आंदोलन ने सिख समदाय के सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भमिका निभाई और इसके साथ-साथ उसे राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा से भी जोड़ा। अकाली आंदोलन की पूर्ण रूप से चर्चा करने से पूर्व संक्षिप्त रूप से उन आंदोलनों की चर्चा करना भी संगत होगा जिनके द्वारा सामाजिक जागृति उत्पन्न हुई और गुरुद्वारा सुधार के लिए अकाली आंदोलन प्रारंभ हो सका।

19.2 सिख समाज में कुरीतियाँ और प्रारंभिक सुधार

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि सिख धर्म जातिगत भेदभाव और धर्म के मूल तत्वों से हटकर कर्मकाण्डों की प्रतिष्ठा और धर्म पर परोहितों के स्वामित्व जैसी कुरीतियों के विरोध में प्रारंभ हुआ। इसके संस्थापक गुरु नानक देव, एक-ईश्वर और विश्व-बंधुत्व में विश्वास रखते थे। उन्होंने बेकार के धर्म कृत्यों और कर्मकाण्डों की निन्दा की और एक-ईश्वर में विश्वास का प्रचार किया। मध्यकालीन दूसरे संतों की तरह उन्होंने भी अच्छे कार्यों और सच्चे जीवन पर बल दिया। नानक जी ने कहा, "सत्य उच्च है, परन्तु सत्य जीवन उच्चतम है"। अपनी शिक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिए गुरु नानक ने **संगत** (सभा) और **पंगत**, एक पंक्ति में बैठकर **लंगर** (निःशुल्क भोजन) करने जैसी संस्थाओं की स्थापना की। गुरु नानक ने नारी-समानता की वकालत भी की। नानक जी ने यह भी कहा, "नारियों का अपमान क्यों करें, ये तो राजाओं और महापुरुषों को जन्म देने वाली हैं"। उन्होंने समाज में व्याप्त कई प्रकार की कुरीतियों का विरोध किया और न्यायसंगत सामाजिक व्यवस्था का आह्वान किया। किन्तु गुरु नानक और उत्तरवर्ती सिख गुरुओं की ये साधारण-सी व्यावहारिक शिक्षाएँ लोगों ने ठीक से नहीं अपनाईं। कालान्तर में सिख धर्म ने अपने पाँव जमा लिये और अपने धर्मकृत्यों की स्थापना कर ली। रणजीत सिंह द्वारा सिख राज्य की स्थापना से धार्मिक स्थानों में आडंबर प्रारम्भ हुए। इन्हीं कुरीतियों की सिख गुरु और दूसरे सामाजिक सुधारकों ने निंदा की थी। उसी समय सिख समुदाय में कई सामाजिक और धार्मिक आंदोलन चल पड़े। हम यहाँ कुछ महत्वपूर्ण आंदोलनों का अध्ययन करेंगे।

19.2.1 निरंकारी आंदोलन

बाबा दयाल दास, जो एक सन्तवृत्ति के थे और महाराजा रणजीत सिंह के समकालीन थे, सिख धर्म सुधारकों में सर्वप्रथम आगे आए। उन्होंने सिख समाज में धीरे-धीरे आ रही सामाजिक कुरीतियों की निंदा की। बाबा दयाल ने मकबरों और कब्रों की पूजा का विरोध किया। उन्होंने **आनन्द कारज**, (विवाह) का सरलीकरण किया, जिसने 1909 में आनन्द विवाह अधिनियम के रूप में पारित होकर कानूनी मान्यता प्राप्त की। इस विवाह पद्धति में विवाह **गुरु** ग्रन्थ साहिब की उपस्थिति में ग्रंथी द्वारा, ग्रन्थ साहिब से चार उचित पदों के गायन द्वारा सम्पन्न होता है और कोई धार्मिक कृत्य नहीं होता। दहेज, बारात, शराब, नाचना-गाना वर्जित होता है।

बाबा दयाल का देहावसान 30 जनवरी, 1855 में हुआ और उनके पुत्र बाबा दरबारा सिंह ने अपने पिता की शिक्षाओं का प्रचार जारी रखा। दरबारा सिंह का काफी विरोध हुआ। स्वर्ण मंदिर के मुख्य ग्रन्थी ने उन्हें मंदिर में प्रवेश कर आनन्द कारज पद्धति के अनुसार विवाह नहीं करने दिया। बाबा दरबारा सिंह के देहावसान पर उनके भाई रत्न चन्द ने जिन्हें प्रेम से बाबा रता जी कहते थे, उनके कार्य को आगे बढ़ाया। यह जानकर आश्चर्य होता है कि सिख **धर्म में प्रथम सामाजिक सुधारकों में आमतौर पर अमृत छके सिख नहीं थे, परन्तु वे लोग थे** जो सिख परंपरा और सामाजिक जीवन की सादगी से प्रेम और उन मूल्यों का आदर करते थे। यह आंदोलन "निरंकार" (आकार रहित ईश्वर) के नाम से प्रसिद्ध है। बाबा दयाल ने मानव-गुरुओं की पूजा का विरोध किया और अपने अनुयायियों से आशा की कि वे आकार रहित ईश्वर की पूजा करें। "**जपो प्यारियो धन्न निरंकार, जो देह धारी सब ख्वार**"—आकार रहित ईश्वर की उपासना करो, देहधारी से भ्रमित न हों।

19.2.2 नामधारी आंदोलन

नामधारी आंदोलन कूका आंदोलन के रूप में प्रसिद्ध है, इसके अनुयायी जब हर्षोन्माद में होते थे तो **कूका** (चीखते) करते थे। भगत, जवाहरमल और बाबा बालक सिंह ने इस आंदोलन का शुभारंभ किया और इस आंदोलन ने बाबा राम सिंह के नेतृत्व में सिखों में सामाजिक और धार्मिक जागृति पैदा की। राम सिंह ने अपने अनुयायियों को एक ईश्वर की उपासना, प्रार्थना और ध्यान द्वारा करने का उपदेश दिया। उन्होंने अपने अनुयायियों को सुझाव दिया कि वे सदा ईश्वर की आराधना में लगे रहें। उन्होंने जातिप्रथा, स्त्री शिशु हत्या, बाल विवाह और विवाह में कन्याओं की अदला-बदली जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरोध में प्रचार किया। उन्होंने आसान और सस्ती आनन्द विवाह पद्धति को प्रोत्साहन दिया। राम सिंह के उपदेशों का सिख जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा। समकालीन यूरोपीय अधिकारियों ने बाबा राम सिंह की प्रसिद्धि और प्रचार कार्य को गंभीरता से लिया, जोकि सरकार के निम्न संसदीय पेपर से विदित होता है :

> "....... उस (राम सिंह) ने सिखों में जाति भेदभाव का उन्मूलन किया, सब जातियों में भेदभाव रहित विवाह की वकालत की, विधवा विवाह का उपदेश दिया, जो उसने स्वयं कराए, उसने कभी भिक्षा नहीं ली और अपने अनुयायियों को भी भिक्षा न लेने का और शराब के सेवन तथा नशे का निषेद्ध किया....... उसने अपने शिष्यों को स्वच्छता, सत्य बोलने और प्रत्येक को लाठी रखने का आह्वान किया और उन्होंने उसका पालन किया। ग्रंथ ही को उन्होंने अपना प्रेरणा स्रोत माना है। उनकी पगड़ी की गांठ **शीदपुग** – जोकि श्वेत ऊनी गांठों की कंठहार सी होती है, से उनका भ्रातृत्व झलकता है, वे सभी माला रखते हैं और माला फेरते भी हैं।"

यद्यपि बाबा राम सिंह का प्रचार कार्य सही जीवन-यापन, सहिष्णुता और क्षमा पर आधारित था, किन्तु उनके कुछ अनुयायी अनुशासनहीन थे और धार्मिक उन्माद में कुछ ऐसे कार्य कर गए, जिनसे उनकी सरकार से टक्कर हो गई। उनके कई कट्टर अनुयायी गो-हत्या पर भड़क उठे और उन्होंने अमृतसर, राजकोट और मलेरकोटला में कई कसाइयों का वध कर दिया। दण्ड-स्वरूप उनको तोपों के मुँह से बाँध कर उड़ा दिया गया। यह आंदोलन सामाजिक था अथवा राजनीतिक, इस विषय पर विद्वानों में मतभेद है, किन्तु कूकाओं के ऊपर सरकारी जुल्म ने जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति घृणा फैला दी। इसने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में होने वाले अकालियों के संघर्ष की पृष्ठभूमि बनाई।

19.2.3 सिंह सभा आंदोलन

आने वाले वर्षों में कूकाओं के उत्पीड़न और उनके आंदोलन के दमन के फलस्वरूप 1873 में सिंह सभा आंदोलन का जन्म हुआ। सिंह आंदोलन सभा के कार्यकलापों का सिख जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा। सिंह सभा के संस्थापक, जिनमें बहुत से शिक्षक मध्यम वर्ग के थे, पंजाब के अन्य सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों से भी संबंधित थे। उन्हें देश के अन्य भागों में ऐसे ही अन्य आंदोलनों का ज्ञान था। उनका विश्वास था कि सिख समुदाय में ये कुरीतियाँ अशिक्षा के कारण हैं। उन्होंने समझा कि सामाजिक और धार्मिक सुधार तभी सम्भव है जबकि जनता को अपनी प्राचीन परंपरा की जानकारी हो।

सिंह सभा ने सामाजिक और धार्मिक सुधार के लिए शिक्षा का प्रसार किया और जानबूझकर राजनीतिक प्रश्नों से बचने का प्रयास किया, ताकि ब्रिटिश शासकों के कोप-भाजन से बचा जा सके।

सिंह सभा के नेताओं ने, जोकि बड़े ज़मींदार थे अथवा "सिख जनता के हितों" को समझते थे, ब्रिटिश शासकों को अप्रसन्न नहीं किया। इस आंदोलन के प्रचारक ब्रिटिश सरकार को सभी सामाजिक और धार्मिक बुराइयों के लिए सीधे उत्तरदायक नहीं मानते। फिर भी वे प्रचारक ब्रिटिश सरकार को उस समय गिरती हुई स्थिति के लिए दोषी ठहराने से पूर्णरूपेण न बचा सके। पंजाब में रणजीत सिंह राज्य की खुशहाली की चर्चा करते हुए उन्होंने वर्तमान में सिखों के अध:पतन को मुगल काल के समतुल्य बताया। उनका मानना था कि मुगल और ब्रिटिश की समतुल्यता "कारणों की समतुल्यता" के कारण है।

फिर भी सिंह सभा की महत्वपूर्ण देन खालसा कॉलेज, विद्यालय और दूसरे शिक्षण केंद्रों की शृंखलाबद्ध स्थापना है। सिंह सभा के नेता अनुभव करते थे कि सिखों में शिक्षा प्रसार हेतु

ब्रिटिश शासकों का सहयोग अनिवार्य है। अतः उन्होंने वायसराय और अन्य ब्रिटिश अधिकारियों की संरक्षता प्राप्त की। लाहौर में खालसा दीवान की स्थापना के तुरन्त बाद एक आंदोलन प्रारंभ हुआ कि सिखों के लिए केंद्रीय कॉलेज स्थापित किया जाए, जिसके साथ बाहरी जिलों के विद्यालय संबंधित किए जाएँ। सिंह सभा के शैक्षणिक कार्यों को भारत सरकार, ब्रिटिश अधिकारियों और शासकों तथा सिख राजाओं का प्रोत्साहन और संरक्षण मिला। सिंह सभा ने अमृतसर में 1892 में खालसा कॉलेज की स्थापना की।

यद्यपि खालसा कॉलेज को संस्थापकों और ब्रिटिश संरक्षकों ने शुद्ध शैक्षणिक विकास के लिए स्थापित किया था, किन्तु इसके कुछ विद्यार्थी और शिक्षक उस समय प्रान्त में चल रही राजनीतिक अस्थिरता और बढ़ती राष्ट्रीयता से अपने को अलग न रख सके। 1907 में गुप्तचर विभाग ने अधिकारियों को सूचित किया कि खालसा कॉलेज ''छात्रों में राष्ट्रीय भावना के विकास का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है।'' राजनीतिक रूप से सचेत शिक्षकों और गोपालकृष्ण गोखले एवं महात्मा गांधी सरीखे राष्ट्रीय नेताओं से प्रेरणा लेकर छात्रों ने दो बार यूरोपीय अधिकारियों के समक्ष, जब वे कॉलेज में राष्ट्रीयता को दबाने के उपाय सुझाने आए, प्रदर्शन किया। सिख-शिक्षा कान्फ्रेंस के माध्यम से सिंह सभा ने खालसा विद्यालयों की शृंखला स्थापित की, जिन्होंने अपरोक्ष रूप से सामाजिक चेतना और सुधार के केन्द्रों का कार्य किया। सिख समुदाय में हुए सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों ने सिखों के जीवन में धीरे-धीरे जड़ पकड़ती बुराइयों की ओर संकेत किया और उन्हें सुधार के लिए प्रेरित किया। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में, पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता, राष्ट्रीय समाचारपत्रों के प्रभाव और देश में राष्ट्रीय जागृति से सिखों में असंतोष फैला और आने वाले अकाली आंदोलन की पृष्ठभूमि बना, जोकि एक ओर तो सिख गुरुद्वारों में **महन्तों** और दूसरे स्वार्थी लोगों के विरुद्ध था, दूसरी ओर पंजाब में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध था। इसके बारे में हम अगले भाग में पढ़ेंगे।

बोध प्रश्न 1

1 उन मुख्य बुराइयों को लिखें, जिनके विरुद्ध सिख समाज सुधारक लड़े।

....

....

....

....

....

2 आनन्द कारज विवाह क्या है ? किसने इस पद्धति का समर्थन किया।

....

....

....

....

....

3 कूका आन्दोलन का क्या महत्व है ?

....

....

....

....

....

4 शिक्षा के क्षेत्र में सिंह सभा आंदोलन का क्या योगदान है ?

....

. . . .

. . . .

. . . .

19.3 अकाली आंदोलन

सिख सुधारकों ने अकाली आंदोलन को अपने धार्मिक स्थानों में धीरे-धीरे फैल रही सामाजिक कुरीतियों को हटा कर उन्हें पवित्र रखने के लिए प्रारंभ किया। सिख मंदिर, जिन्हें **गुरुद्वारा** अथवा **धर्मशाला** कहते हैं, सिख गुरुओं ने सामाजिक, धार्मिक और नैतिक शिक्षा के केन्द्र के रूप में और निर्धन तथा दुखी लोगों को भोजन व आवास देने के लिए स्थापित किए। वहाँ सिख धर्म की मानव समानता की शिक्षाओं पर अमल किया जाता था। सभी व्यक्ति बिना किसी जाति, रंग और लिंग भेद के प्रत्येक गुरुद्वारे से संबंधित **लंगर** (सामाजिक भोजन) में प्रवेश कर निःशुल्क भोजन प्राप्त कर सकते थे। समकालीन लेखकों का मत है कि सिख सामाजिक और धार्मिक कृत्यों में ब्राह्मणों के प्रभुत्व को नहीं मानते थे। चारों **वर्णों** के लोग सिख गुरुद्वारों में बिना रोकटोक प्रवेश पाकर पवित्र **प्रसाद** और **लंगर** में निःशुल्क भोजन कर सकते थे।

सिखों की पवित्र परंपरा के अनुसार गुरुद्वारा प्रबंधक गुरुद्वारों के मुख्य दान को अपने निजी काम में नहीं लाते थे, बल्कि उसे लंगर और दूसरे सामाजिक हित के कार्य में लगाते थे। दसवें गुरु गोविंद सिंह के देहावसान के बाद, सिखों के उत्पीड़न के समय सिख गुरुद्वारों का प्रबन्ध **उदासियों** ने संभाला। ये सिख धर्म को तो मानते थे, किन्तु उनके बाहरी चिह्नों को अक्षरशः नहीं मानते थे। अतः वे उत्पीड़न से बच गए। उस समय कई गुरुद्वारों के उदासी प्रमुखों ने गुरुद्वारों को चलाने में सिख धर्म की महत्वपूर्ण सेवा की। उनका उच्च नैतिक चरित्र और ईमानदारी के लिए काफी आदर था। बहुत से **उदासी** किसी भी गुरुद्वारे और उसकी सम्पत्ति से संबंधित नहीं थे, परन्तु स्थान-स्थान पर घूमते रहते थे। कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने स्थायी संस्थाएँ और अपने अनुयायी भी बना लिये, उन्हें **महन्त** कहते हैं। प्रारम्भ में इन **महन्तों** का अपने क्षेत्र की संगत में विश्वास और आदर था। उन्होंने गुरु नानक के इस उपदेश का पालन किया कि दान की लालसा नहीं होनी चाहिए। अधिकांश महंतों ने शुद्धता और सादगी की इस परंपरा को छोड़ दिया क्योंकि उनमें से अधिकांश महंतों की आमदनी काफी बढ़ गई थी। इस आय का मुख्य स्रोत महाराजा रणजीत सिंह और अन्य सिख सरदारों से प्राप्त कर मुक्त जागीर थीं।

19.3.1 गुरुद्वारों के धन का दुरुपयोग

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शक्तिशाली सिख सरदारों के उदय और 1799 में रणजीत सिंह द्वारा राज्य स्थापना से सिख धर्म में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। धार्मिक स्थानों के साथ जुड़ी सम्पत्ति और विशेषाधिकारों के कारण कई जटिल धर्मकृत्य और कर्मकाण्डों का आरम्भ हुआ तथा धनिक और शक्तिशाली **महन्तों** का उदय हुआ। लगभग सभी प्रसिद्ध गुरुद्वारों को महाराजा रणजीत सिंह और दूसरे सिख सरदारों ने करमुक्त जागीरें प्रदान की थीं। सहसा पैसे आने से कई महत्वपूर्ण गुरुद्वारों के **महन्तों** के जीवन-स्तर में परिवर्तन आ गया। वे अपने गुरुद्वारे की न्यास सम्पत्ति को अपनी निजी सम्पत्ति में बदलने लगे। यह सिख गुरुओं और सिख धर्मशास्त्रों के उपदेशों के बिल्कुल प्रतिकूल था। धीरे-धीरे **महन्त** और उनके अनुयायी विलासपूर्ण जीवन-यापन करने लगे और कई सामाजिक कृत्यों में भी पड़ गए। सिख धर्म के अनुयायियों ने **महन्तों** की इन कुरीतियों को हटाने के लिए सामाजिक विरोध किया और सिख गुरुद्वारों को वंशानुगत **महन्तों** से मुक्त कराने के लिए एक सामाजिक आंदोलन चलाया। इस आंदोलन को अकाली आंदोलन कहते हैं, क्योंकि इस सुधार का नेतृत्व अकाली **जत्थों** (स्वयंसेवकों का समूह) ने किया।

19.3.2 स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त पर नियंत्रण के लिए संघर्ष
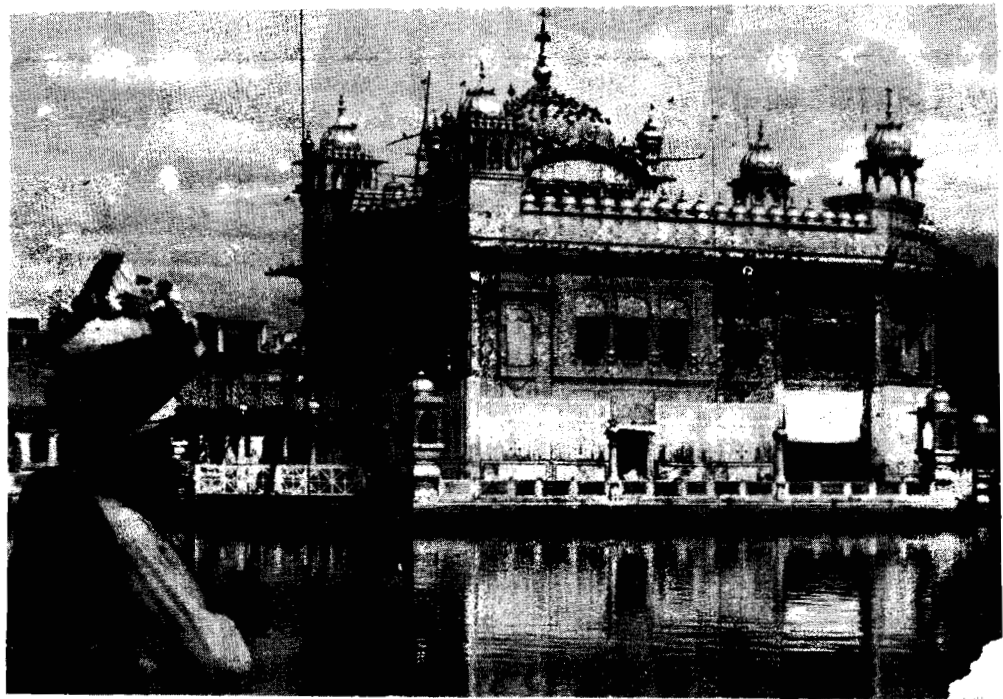
12 स्वर्ण मंदिर, अमृतसर

अमृतसर को, जिसे पहले रामदासपुर और गुरु का चक कहते थे, चौथे गुरु रामदास जी ने 1577 में बसाया। पाँचवें गुरु अर्जनदेव जी ने 1589 में मंदिर की स्थापना की, जोकि स्वर्ण मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। छठे गुरु हरगोविन्द ने अकाल तख्त का निर्माण किया और उसे ऐहिक सिख पीठ घोषित किया। प्रारंभ में स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त की देख-रेख भाई मनी सिंह जैसे सक्षम और पवित्र ग्रन्थी करते थे। किन्तु पंजाब के मुगल गवर्नरों के हाथों सिखों के उत्पीड़न और बाद में अब्दाली आक्रमक – अहमदशाह अब्दाली के समय में इन दो महत्वपूर्ण सिख केन्द्रों का प्रबन्ध उदासी महन्तों पर आ पड़ा। महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में मंदिर को संगमरमर और स्वर्ण जड़ित फलकों से खूब सजाया गया। अतः यह स्वर्ण मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इन मंदिरों के साथ करमुक्त जागीर भी लगा दी गई। 1849 में पंजाब के ब्रिटिश भारत में विलय के बाद ब्रिटिश सरकार ने इन दोनों स्थानों का प्रबन्ध सम्भाल लिया और उनके कार्यों की प्रतिदिन देख-रेख के लिए एक दस सदस्य कमेटी का एक ''**सर्बराह**'' की अध्यक्षता में गठन किया। (देखें जान मेनार्ड ''पंजाब में सिख समस्या'' कन्टेम्प्रेरी रिव्यू, सितम्बर 1923, पृष्ठ 295)।

कुप्रबन्ध और भ्रष्टाचार

सरकार द्वारा सर्बराह की नियुक्ति ने कई समस्याएँ उत्पन्न कर दीं। सर्बराह लोगों का ध्यान नहीं रखता था, परन्तु अपने नियोजक—अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर को प्रसन्न करने में लगा रहता था। ग्रन्थी कई प्रकार की कुरीतियों, जैसे दान और दूसरी वस्तुओं के दुरुपयोग में लग गए। इन स्थानों की पवित्रता का हनन हुआ। वहाँ वेश्यालय चलने लगे, अश्लील साहित्य बिकने लगा और मंदिर में आने वाली निर्दोष महिलाओं के साथ बलात्कार होने लगा (देखें—जीवन भाई, मोहन सिंह वैद, पृष्ठ 121)।

अमृतसर के स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त में भ्रष्टाचार और इनके प्रबंधों पर सरकारी नियंत्रण को लेकर सिख समुदाय में सुधार आंदोलन से पूर्व ही काफी असंतोष था। सुधारक इन केन्द्र स्थानों को शीघ्रातिशीघ्र इन बुराइयों और सरकारी नियंत्रण से मुक्त करना चाहते थे। पंजाब के ब्रिटिश अधिकारियों ने किसी प्रकार के सुधार और चल रहे प्रबन्ध में परिवर्तन का विरोध किया। उनका मानना था कि इससे वे धार्मिक स्थानों का प्रयोग अपनी

शक्ति बनाये रखने और अपने राजनीतिक विरोधियों को कमजोर करने से वंचित हो जाएंगे। सामान्यतः स्वर्ण मंदिर पर सरकार द्वारा नियुक्त सर्बराहों को ब्रिटिश शासन और उसके कार्यकलापों के गुणगान के लिए उपयोग किया जाता था।

प्रबन्ध में सिख नियंत्रण के कमजोर होने और सरकारी नियंत्रण बढ़ने से मंदिर के दैनिक कार्यों में प्रबन्धक और ग्रन्थी डिप्टी कमिश्नर से आदेश लेने लगे और सिख परम्परा तथा भावनाओं की अनदेखी करने लगे। सरकार द्वारा नियुक्त सर्बराह, अपने नियोजक को प्रसन्न करने के पश्चात् अपना समय मंदिर की सम्पत्ति के दुरुपयोग में व्यतीत करने लगा और अपने धार्मिक कार्यों की अवहेलना करने लगा। मंदिर की बहुमूल्य भेंटें धीरे-धीरे सर्बराहों और ग्रन्थियों के घर जाने लगीं। मंदिर क्षेत्र पुरोहितों और ज्योतिषियों द्वारा प्रयोग होने लगा तथा गुरुद्वारों के अन्दर खुले आम मूर्ति पूजा होने लगी। समकालीन लेखों के अनुसार, **वसंत** और **होली** त्योहारों पर सभी स्थान स्थानीय बदमाशों, चोरों और दूसरे दुश्चरित्र लोगों के अड्डे बन जाते। अश्लील साहित्य खुले आम बिकता और पड़ोस के घरों में वेश्यालय खुलते, जहाँ पर पवित्र मंदिर में आने वाली महिलाएँ कामुक साधु, महन्त और उनके मित्रों की शिकार बनतीं।

जाति के आधार पर भेदभाव

सिख धर्म में जाति के आधार पर भेदभाव नहीं है, फिर भी स्वर्ण मंदिर के मुख्य ग्रन्थी ने नीची जाति वाले मजहबी सिखों को सीधे स्वर्ण मंदिर में प्रसाद नहीं चढ़ाने दिया। उनको मंदिर में **प्रसाद** चढ़ाने के लिए एक उच्च जाति का सेवादार किराये पर लेना पड़ा। सिख जाति में कई सुधार आंदोलनों और सामाजिक धार्मिक जागृति के परिणामस्वरूप अमृतसर की सिख बिरादरी ने नीची जाति के लोगों के साथ मेल-मिलाप, अंतर्विवाह और सामाजिक भोजन की वकालत की। जब स्वर्ण मंदिर के ग्रन्थियों ने नीची जाति के लोगों को अन्दर आकर स्वयं **प्रसाद** नहीं चढ़ाने दिया तो खालसा बिरादरी ने इस विषय पर जन-जागरण कर ग्रन्थियों के अधिकार को चुनौती देने का निश्चय किया। उन्होंने 12 अक्तूबर, 1920 में, अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक **दीवान** का आयोजन किया, जिसमें प्रो० तेजा सिंह, बाबा हरकिशन सिंह और जत्थेदार करतार सिंह झाब्बार तथा अन्य सुधार आंदोलन के प्रमुख नेताओं ने भाग लिया। **दीवान** में उन अछूतों को, जिन्होंने सिख धर्म पर आस्था जताई, अमृत छकाया गया। तत्पश्चात् प्रमुख सिख नेताओं ने उनके साथ भोजन किया और धार्मिक जुलूस के रूप में स्वर्ण मंदिर की ओर चल पड़े जब वह मंदिर में पहुँचे तो ड्यूटी वाले ग्रन्थी भाई गुरवचन सिंह ने नीची जाति वालों से प्रसाद लेने से और उनके लिए प्रार्थना करने से इनकार कर दिया। काफी विवाद के बाद निर्णय गुरु ग्रन्थ साहिब के पाठ से सुझाया गया। निर्णय सुधारवादियों के हक में गया। ग्रन्थियों ने स्थिति परिवर्तन को नहीं माना और विरोध में मंदिर से चले गये। पवित्र पुस्तक गुरु ग्रन्थ को ग्रन्थी बिना किसी को सौंपे छोड़ गए थे, सुधारको ने स्थिति पर नियंत्रण कर स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त के प्रबन्ध के लिए एक समिति बनाई।

अतः आपने देखा कि सुधारक :

- मंदिर प्रबन्धकों द्वारा चन्दे का दुरुपयोग
- मंदिर परिसर का असामाजिक और भ्रष्ट लोगों द्वारा प्रयोग, और
- नीची जाति वालों के पवित्र मंदिर में प्रवेश की मनाही के बारे में बहुत अधिक चिंतित थे।

बोध प्रश्न 2

1 सर्बराहों के अधीन सिख मंदिरों में हो रही मुख्य कुरीतियों को लिखिए।

....

....

....

....

2 धार्मिक मामलों में नीची जाति वाले लोगों से किस प्रकार भेदभाव किया गया ?

....

....

....

....

....

3 मंदिरों के प्रबन्ध में सर्बराह सिख समाज के विचारों पर ध्यान क्यों नहीं देते थे ?

....

....

....

....

....

19.3.3 ननकाना दुर्घटना

अमृतसर के स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त का प्रबन्ध संभालने के पश्चात् सुधारकों ने दूसरे सिख गुरुद्वारों की ओर ध्यान दिया। ननकाना में गुरु नानक देव के जन्म स्थान पर गुरुद्वारा जन्म स्थान और दूसरे मंदिरों पर वंशानुगत महन्तों का प्रभुत्व था। ननकाना के गुरुद्वारा जन्म स्थान का प्रमुख नारायण दास कई सामाजिक और धार्मिक बुराइयों, जैसे वेश्या रखना, गुरुद्वारे में नाचने वाली लड़कियों को बुलाना तथा पवित्र स्थान पर गन्दे गाने गाना आदि करने लगा। कई सिख नेताओं के विरोध के बाद भी महन्त ने उन बुराइयों को **नही** छोड़ा। परिणामस्वरूप 130 सुधारकों ने, जिसमें महिलाएँ भी थीं, गुरुद्वारा जन्म स्थान की ओर भाई लछमन सिंह के नेतृत्व में प्रस्थान किया। 20 फरवरी, 1921 को प्रातः जब जत्था गुरुद्वारे पर पहुँचा तो निहत्थे और शान्तिप्रिय सुधारकों पर महन्त के भाड़े के सैनिकों ने आक्रमण किया। कई सुधारक मारे गए और घायलों को वृक्षों के साथ बाँध कर जला दिया गया। साक्ष्य को नष्ट करने के लिए महन्त के आदमियों ने सभी शवों को एकत्र कर भस्म कर दिया। महन्त द्वारा जत्थे के सभी 130 व्यक्तियों की मार्मिक हत्या से देश में शोक और क्रोध की लहर दौड़ गई। महन्त के इस जघन्य कार्य की महात्मा गांधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने निन्दा की। महात्मा गांधी 3 मार्च को ननकाना में अकाली सुधारकों के साथ सहानुभूति प्रकट करने आये। अपने भाषण में महात्मा गांधी ने महन्त के कार्य की निंदा की और अकाली सुधारकों को सरकारी जाँच आयोग से असहयोग का सुझाव दिया। महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं के सुझाव पर अकाली सुधारकों ने अपने आंदोलन को और व्यापक बनाया उन्होंने दोनों ओर आक्रमण किया। एक ओर उन्होंने महन्त के भ्रष्टाचार का और दूसरी ओर पंजाब सरकार का विरोध किया । इस परिवर्तन के कारण अकाली आन्दोलनकारियों ने **तोशखाने** की कुंजी और बाद में शान्तिपूर्ण गुरु-का-बाग संघर्ष में भाग लिया।

19.3.4 तोशखाना कुंजियों की समस्या

ज़ैसे पहले कहा गया है कि जब ग्रन्थी अमृतसर के स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त को छोड़ गए तो अकाली सुधारकों ने इनका प्रबन्ध सम्भाल कर इनके लिए एक समिति का गठन किया। समिति ने सरकार द्वारा नियुक्त प्रबन्धक को तोशखाना (कोष) की कुंजियाँ देने को कहा। इससे पहले कि प्रबन्धक कुंजियाँ दे पाता तभी ब्रिटिश डिप्टी कमिश्नर उससे कुंजियाँ लेकर चला गया। सरकार के इस कार्य ने सिख जाति में गहरा असंतोष उत्पन्न किया। कुंजियों को वापस लेने के लिए अकाली सुधारकों ने एक शक्तिशाली आंदोलन प्रारम्भ किया जो ''कुंजियों की समस्या'' के नाम से प्रसिद्ध है। इस आंदोलन में सिख सुधारकों का साथ

पंजाब में कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने भी दिया। महात्मा गांधी का असहयोग आंदोलन चल रहा था, तभी पंजाब सरकार ने कांग्रेस कार्य से अकाली सुधारकों को अलग करने के लिए "कुंजी समस्या" के सम्बन्ध में गिरफ्तार सभी अकाली स्वयंसेवकों को छोड़ दिया और स्वर्ण मंदिर के कोष की कुंजियाँ सभा के प्रधान को सौंप दीं। राष्ट्र ने अकाली सुधारकों की इस विजय को राष्ट्रीय शक्तियों की विजय माना। इस अवसर पर महात्मा गांधी ने बाबा खड़क सिंह, अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को निम्न तार दिया:

"भारत की स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध में विजय हुई। मुबारक हो।"

फरवरी, 1922 में चौरी-चौरा हिंसा तथा महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप असहयोग आंदोलन स्थगित हुआ। इसके बाद पंजाब सरकार ने अकाली सुधारकों को "पाठ" पढ़ाने की सोची। इसने एक और आंदोलन को जन्म दिया, जोकि **गुरु-का-बाग** मोर्चा के नाम से प्रसिद्ध है।

बोध प्रश्न 3

1 ननकाना दुर्घटना क्यों हुई ?

....

....

....

....

....

2 अकाली आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन के सम्पर्क में कैसे आया ?

....

....

....

....

....

3 कुंजियों की समस्या क्या थी ? ब्रिटिश सरकार ने इस विषय में क्यों घुटने टेक दिए ?

....

....

....

....

....

19.3.5 गुरु-का-बाग मोर्चा

जैसे पूर्व कहा गया है कि कुंजियों की समस्या के सम्बन्ध में पकड़े गए अकाली कैदियों की बिना शर्त रिहाई और सभा को कुंजियों की वापसी से पंजाब सरकार की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। पंजाब सरकार के अधिकारियों ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने के लिए गुरु-का-बाग गुरुद्वारे के सूखे कीकर वृक्षों की लकड़ी काट रहे अकाली स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस का तर्क था कि सूखी लकड़ी गुरुद्वारे के महन्त की निजी सम्पत्ति है और अकाली सुधारक इनको लंगर के लिए ले जाकर "चोरी" कर रहे हैं। सूखी लकड़ियों को लंगर के लिए काटने के अधिकार के समर्थन में अकाली जत्थे गुरु-का-बाग की ओर चल पड़े, जहाँ पुलिस ने इन सुधारकों को गिरफ्तार कर लिया।

13 गुरु-का-बाग की तरफ बढ़ते हुए स्वयंसेवक

5,000 सुधारकों को गिरफ्तार करने के पश्चात् पंजाब सरकार की जेलों में इन सुधारकों के लिए स्थान न रहा। वे उनकी निष्ठुरता से पिटाई, जब तक वे बेहोश न हों, करने लगे। पिटाई के बाद उन्हें रिहा कर दिया जाता। गुरु-का-बाग के इस दमन से अकाली सुधारकों ने राष्ट्रीय नेताओं और समाचारपत्रों की सहानुभूति और समर्थन प्राप्त किया। आदरणीय सी.एफ. एड्रयूज — एक ब्रिटिश मिशनरी, जोकि भारतीय राजनीतिक चेतना के प्रति सहानुभूति रखते थे, गुरु-का-बाग में अकालियों की पिटाई देखकर और निर्दोष अकाली स्वयंसेवकों के कष्टों को देखकर इतना द्रवित हुए कि उन्होंने "पुलिस के कार्य को अमानवीय, पाशविक, बुरा और कायराना, एक अंग्रेज़ के लिए अविश्वसनीय और इंग्लैंड की नैतिक हार कहा।"

इस सरकारी कार्य की राष्ट्रीय नेताओं द्वारा आलोचना और उसे समाचारपत्रों के खूब उछालने पर पंजाब के गवर्नर ने गुरु-का-बाग अकाली जत्थों की पिटाई रोकने का पुलिस को आदेश दिया। गुरु-का-बाग आंदोलन में सभी गिरफ्तार व्यक्तियों को बिना शर्त छोड़ दिया गया तथा स्वयंसेवकों को बाग से लकड़ी काटकर गुरु-का-बाग गुरुद्वारे के लंगर में ले जाने की अनुमति दे दी गई।

14 गुरु-का-बाग में हुई गिरफ्तारियाँ

19.3.6 नाभा में अकाली आंदोलन

"कुंजियों की समस्या" और गुरु-का-बाग के दोनों आंदोलनों में अकाली सुधारकों की जीत से अकाली नेताओं की शक्ति, प्रतिष्ठा और मनोबल को बहुत बल मिला। अपनी इस जीत की घड़ी में उन्होंने एक और आंदोलन का सूत्रपात किया। उन्होंने नाभा के महाराजा रिपुदमन सिंह, जिसे ब्रिटिश सरकार ने बलपूर्वक सिंहासन से हटा दिया था, पुनः स्थापना की माँग की। इस विषय का अकाली आंदोलनों से सीधा सम्बन्ध नहीं था, क्योंकि अभी तक इन आंदोलनों के मुख्य विषय सामाजिक और धार्मिक सुधार ही थे। अकाली सुधारकों का प्रान्त में एक शक्तिशाली राष्ट्रीय विरोध के रूप में उदय होने के कारण कांग्रेस नेतृत्व ने उनके नाभा आंदोलन का समर्थन किया। नई दिल्ली में सितम्बर, 1923 में कांग्रेस कार्यसमिति के विशेष अधिवेशन ने जवाहरलाल नेहरू, ए. टी. गिडवानी और के. सन्थानम को नाभा में पर्यवेक्षक के रूप में भेज कर स्थिति की सूचना कार्यसमिति को देने का निर्णय लिया। नेहरू और उसके सहयोगियों को नाभा के क्षेत्र में प्रवेश करते ही गिरफ्तार कर लिया गया और उनको मनगढ़त अपराधों के अधीन जेल भेज दिया गया। अपने नाभा जेल के प्रवास में कांग्रेस पर्यवेक्षकों को अकाली संघर्ष का आंतरिक ज्ञान ही नहीं हुआ, बल्कि ब्रिटिश प्रशासन के अधीन नाभा के सिख राज्य में न्याय व्यवस्था की मनमानी का भी पता चला। जवाहरलाल नेहरू ने 23 नवम्बर, 1923 में नाभा जेल में अपने लेख में नाभा की न्याय व्यवस्था की मनमानी और कुटिलता के कारण आलोचना की है और अकालियों के साहस और बलिदान की प्रशंसा की। (देखें एस. गोपाल द्वारा संपादित "**सलेक्टिड वर्क्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू**", प्रथम खंड पृष्ठ 369-375)। मूल हस्तलिखित लेख का अन्तिम भाग इस प्रकार है:

> "मुझे प्रसन्नता है कि मुझ पर उन कार्यों के लिये मुकदमा चलाया जा रहा है, जिसे सिखों ने अपना लिया है। मैं जेल में था, जब सिख जनता गुरु-का-बाग आंदोलन में जी जान से जूझकर जीती। मैं अकालियों के साहस और बलिदान से प्रभावित था और चाहता था कि मुझे उनके किसी सेवा कार्य का सुअवसर मिले, ताकि मैं उनके प्रति गहरी प्रशंसा व्यक्त कर सकूँ। वह अवसर अब मिल गया है और मैं पूर्ण आशा करता हूँ कि मैं उनकी उच्च परम्परा और अदम्य साहस के अनुरूप बन सकूँगा। **सत् श्री अकाल।**"
>
> सेण्ट्रल जेल
नाभा
>
> जवाहरलाल नेहरू
सितम्बर 25, 1923

19.4 गुरुद्वारा बिल का पारित होना और अकाली आंदोलन की समाप्ति

नाभा में अकाली आंदोलन का नाभा के ब्रिटिश प्रशासक और पटियाला के सिख महाराजा भूपिन्दर सिंह ने कड़ा विरोध किया। फरवरी, 1924 में जैतो में शहीदी जत्थे पर गोली चलने से आंदोलन ने फिर गंभीर मोड़ ले लिया। अकाली आंदोलन से ब्रिटिश सेना में सिख सैनिक प्रभावित हो सकते थे। साथ ही अकाली आंदोलनों द्वारा कांग्रेस के आदर्श और कार्यक्रमों का पंजाब के सिख कृषकों पर प्रभाव पड़ रहा था। इन घटनाओं के कारण पंजाब सरकार ने मजबूर होकर अकाली समस्या सुलझाने के लिए जुलाई, 1925 में एक बिल पारित किया, जिससे सिख समाज को अपने गुरुद्वारों के प्रबन्ध के लिए कार्यकर्त्ताओं के चुनाव का कानूनी अधिकार मिला। इस अधिनियम ने महन्तों के वंशानुगत अधिकार को समाप्त कर गुरुद्वारा प्रबन्ध के लिए लोकतान्त्रिक व्यवस्था की स्थापना की। इसके साथ ही पंजाब में पाँच वर्षों से चल रहे अकाली आंदोलन की समाप्ति हुई इसमें 30,000 से अधिक अकाली स्वयंसेवक जेल गये और उनके समर्थकों ने नौकरियाँ, पेंशन गवाईं और बड़े हर्जाने भरे।

ੴ ਸਤਿਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

Press Communiqué No 558.

Instead of redressing the legitimate grievance of the Sikh Community concerning the Nabha State affair, Government has embarked upon the cruel policy of gagging the mouths of the Sikhs. Since Monday, the 16th July, the delivery of the post of the "Akali-Te-Pardesi" has been stopped. For two days, 16th and 17th the private letters of the persons connected with the paper were also stopped. Today, the 18th, the private letters were delivered, but the mail of the newspaper continues to be detained. On enquiry from the Post office, it was found that the above action had been taken according to an order of the Government of India, an official copy of which has not yet been supplied to the paper. Presumably this drastic measure has been taken against the paper because it raised the alarm in the matter of the virtual deposition of Maharaja Sahib of Nabha.

Last year the Government stopped the mail of the Shromani Committee, during the Guru-Ka-Bagh days, with what success the public knows. It is hoped that the sympathy of the Sikhs will once more defeat the purpose of this repressive measure by all possible means and keep the "Akali-Te-Pardesi" in complete touch with the happenings in the Panth.

Amritsar,
18th July 1923.

mansingh
for General Secretary
Shromani Gurdwara Committee

15 एस.जी.पी.सी. द्वारा ब्रिटिश नीति की आलोचना

इस आंदोलन से अकाली सुधारकों ने वंशानुगत महन्तों के प्रबन्ध से अपने ऐतिहासिक सिख मंदिरों को स्वतंत्र कराने में सफलता प्राप्त की। इससे निम्न सामाजिक बुराइयों का अंत हुआ:

- स्वर्ण मंदिर में नीची जाति वाले सिखों द्वारा भेंट देने तथा पूजा की मनाही
- गुरुद्वारों से प्राप्त आय का महन्तों द्वारा निजी उपयोग
- नाचने गाने वाली लड़कियों का गुरुद्वारा परिसर में आमंत्रण और अन्य सामाजिक बुराइयाँ।

आंदोलन ने लोगों में धार्मिक और राजनीतिक जागृति भी उत्पन्न की। उनको अनुभव कराया गया कि सिख परम्परा में जाति के आधार पर कोई धार्मिक बंधन नहीं। गुरुद्वारा अधिनियम के अनुसार, किसी भी जाति का सिख किसी भी पद के लिए, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का प्रधान पद भी सम्मिलित है, चुनाव लड़ सकता है। सिख महिलाओं को भी पुरुषों के समान मत देने का अधिकार मिला वे सिख मंदिरों में सभी धार्मिक और सामाजिक कर्त्तव्य कर सकती थीं। अकाली आंदोलन ने पटियाला, नाभा, जींद और फरीदकोट जैसे सिख राज्यों के लोगों, जो धार्मिक और सामाजिक शोषण से पीड़ित थे, को सामाजिक जागृति प्रदान की। सिख राज्यों के गाँवों में अकाली जत्थों ने लोगों को नैतिक समर्थन दिया, जिससे कि वे अपनी सामाजिक बुराइयों से लड़ सकें। यह विचारणीय है कि अकाली आंदोलन समाप्त होने के पश्चात् भी सिख राज्य के लोगों ने सरदार सेवा सिंह ठीकरीवाला के नेतृत्व में लड़ाई जारी रखी। प्रजा मंडल और राज्य लोक कान्फ्रेंस ने अपना संघर्ष तब तक जारी रखा, जब तक कि भारत स्वतंत्र नहीं हुआ और सभी राज्य भारत संघ राज्य में नहीं मिल गए।

बोध प्रश्न 4

1 नाभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अकाली आंदोलन के प्रति क्या दृष्टिकोण था?

....
....
....
....
....

2 गुरुद्वारा अधिनियम, 1925 के पारित होने से सिख मंदिरों का प्रबन्ध कैसे लोकतान्त्रिक हुआ?

....
....
....
....
....
....
....
....
....

3 अकाली आंदोलन की तीन उपलब्धियाँ लिखिए।

i) ....
....
....

ii) ....

....

....

iii) ....

....

....

19.5 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि कैसे सिख धर्म, जो कर्मकाण्ड और जातिवाद के विरोध में प्रारम्भ हुआ, शीघ्र स्वयं जातिवाद, धार्मिक कर्मकाण्ड और दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों में आ फँसा। उनके धार्मिक स्थानों में कुप्रबन्ध और भ्रष्टाचार फैल गए। कई आंदोलनों ने इन कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयत्न किया। फिर भी, इन सबमें अकाली आंदोलन ही शक्तिशाली और अधिक विस्तृत था। ब्रिटिश सरकार अकाली माँगों के प्रति बड़ी असहानुभूति रखती थी और उसे कुचलना चाहती थी। अतः अकाली आंदोलन ने राष्ट्रीय आंदोलन से सम्पर्क स्थापित किया। इसे राष्ट्रीय नेताओं से भरपूर सहायता मिली। लम्बे संघर्ष के बाद अकालियों ने अपने मंदिरों के प्रबन्ध को भ्रष्टाचार से मुक्त कराया। गुरुद्वारों को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सभी जाति के लोगों के लिए उसके द्वार खोले। सरकार को मजबूर होकर गुरुद्वारा अधिनियम, 1925 पारित करना पड़ा, जिससे सिख मंदिरों के प्रबन्ध में लोकतंत्रता आई।

19.6 शब्दावली

आनन्द विवाह : साधारण विवाह पद्धति, जो दहेज, वैवाहिक कर्मकाण्ड और बारात आदि के बिना सम्पन्न होती है।

महन्त : अकाली आंदोलन से पहले गुरुद्वारों के प्रबन्धक। इन्होंने अपनी संस्थाएँ और चेले बना लिए।

मज़हबी : नीची जाति के सिख, जिनके लिए सिख मंदिरों में प्रवेश निषिद्ध था।

परिसर : बड़े भवन के आसपास का क्षेत्र। गुरुद्वारों की सीमा की दीवारों के अंदर का क्षेत्र।

ईश्वर विमुख : भगवान और पवित्र वस्तुओं का अनादर करना।

कर-मुक्त ज़ागीर : राज्य द्वारा व्यक्तियों और संस्थाओं को दी गई भूमि, जिस पर राज्य कर नहीं लेता।

सर्बराह : सरकार द्वारा नियुक्त गुरुद्वारों की देख-रेख करने वाला

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी : स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त के प्रबन्ध के लिए अकालियों ने, इसे स्थापित किया। बाद में इसने पंजाब के सभी गुरुद्वारों का प्रबंध सम्भाल लिया।

ऐहिक प्राधिकार : धार्मिक प्राधिकार के विपरीत, सांसारिक प्राधिकार।

उदासी : एक सिख मत, जो सिखों के मज़हब के बाह्य चिह्नों को जैसे लम्बे बाल और दाढ़ी बढ़ाना, कड़ा और कृपाण रखना, नहीं मानता।

19.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 मुख्य कुरीतियाँ, जिनके विरुद्ध सुधारक लड़े, जाति भेद, मकबरे और कब्रों की पूजा, कई ईश्वरों की पूजा, अशिक्षा, दहेज, विवाह में कन्याओं की अदला-बदली और स्त्री शिशु हत्या थीं।

2 आनन्द कारज विवाह साधारण विवाह पद्धति है (देखिए उपभाग 19.2.1) बाबा दयाल दास, उसका पुत्र दरबारा सिंह और बाबा राम सिंह।

3 कूका आंदोलन ने जनता का ध्यान सामाजिक बुराइयों की ओर दिलाया। देखिए उपभाग 19.2.2।

4 सिंह सभा आंदोलन ने निरक्षरता के विरुद्ध कार्य किया और शिक्षा तथा राष्ट्रीय भावनाओं के लिए खालसा कॉलेजों की श्रृंखलाओं की स्थापना की। देखिए उपभाग 19.2.3।

बोध प्रश्न 2

1 सिख मंदिरों में सर्बराहों द्वारा चन्दे की हेराफेरी, मंदिरों का असामाजिक तत्वों द्वारा दुरुपयोग, नीची जाति का प्रवेश निषेद्ध आदि कुरीतियाँ विद्यमान थीं। देखिए उपभाग 19.3.1 और 19.3.2।

2 नीची जाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश कर भेंट चढ़ाने का निषेद्ध। देखिए उपभाग 19.3.2।

3 सर्बराहों को ब्रिटिश सरकार नियुक्त करती थी। अत: वे अपने मालिकों को प्रसन्न रखते थे और सिख समाज के विचारों की अवहेलना करते थे। देखिए उपभाग 19.3.2।

बोध प्रश्न 3

1 ननकाना में गुरुद्वारा जन्म स्थान का प्रबन्ध भ्रष्ट महन्त से लेने के लिए अकाली सुधारकों के शान्तिपूर्ण मार्च से यह दुर्घटना घटी। सुधारक इस गुरुद्वारे को क्यों लेना चाहते थे? उपभाग 19.3.3 पुन: देखिए।

2 ननकाना दुर्घटना के बाद महात्मा गांधी और कई अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने पंजाब का दौरा किया और अकाली उद्देश्य को पूर्ण समर्थन दिया। देखिए उपभाग 19.3.3 और 19.3.4।

3 स्वर्ण मंदिर को लेने के बाद अकालियों ने कोष की कुंजियाँ माँगी। ब्रिटिश सरकार ने समर्पण इस लिए किया कि वे अकालियों को काँग्रेस के असहयोग से अलग करना चाहते थे। देखिए उपभाग 19.3.4।

बोध प्रश्न 4

1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अकालियों की नाभा मांग का समर्थन किया और विशेष पर्यवेक्षक भेजे। देखिए उपभाग 19.3.6।

2 गुरुद्वारा अधिनियम, 1925 के पारित होने के पश्चात् प्रत्येक सिख बिना जाति भेद के शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का चुनाव जीत कर मंदिरों के प्रबन्ध में भाग ले सकता था। महिलाओं को भी मत देने का अधिकार मिला। देखिए भाग 19.4।

3 आपके उत्तर में जाति प्रतिबंध, जनता के धन का दुरुपयोग बन्द करना, गुरुद्वारों से असामाजिक तत्वों तथा वंशानुगत महन्ती व्यवस्था का अन्त और सामाजिक राजनीतिक जागृति का प्रारम्भ जैसी उपलब्धियों का उल्लेख होना चाहिए।